INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

Bilaspur (Chhattisgarh)

कोलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत

M.Ed.

Presented By:

Vidya Bhushan Sharma

Lecturer

I.A.S.E. , Bilaspur (C.G.)

INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

Bilaspur (Chhattisgarh)

Kohlberg's Theary of Moral Development

Presented By:

Vidya Bhushan Sharma

Lecturer

I.A.S.E. , Bilaspur (C.G.)

INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

Bilaspur (Chhattisgarh)

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत

लारेन्स कोलबर्ग
(1927 – 1987)

अमेरिकन मनोवैज्ञानिक कोहलबर्ग (1927–1987) ने ही 1958 में नैतिक विकास का सिद्धांत प्रतिपादित किया।

इन्होंने नैतिकता के विकास को सिद्ध करने के लिए नैतिकता की 11 कहानियाँ ली थी। कोहलबर्ग इन्हीं कहानियों को बच्चों को सुनाकर नैतिकता के स्तर को मापते थे।

इन कहानियों में से सबसे प्रसिद्ध हाइनज (हिंज/ Heinz) की कहानी प्रसिद्ध है। इन्होंने 20 वर्ष तक बच्चों के साथ साक्षात्कार कर (कहानी सुनाकर बच्चों से प्रश्न पूछना) निर्णय निकाला व यह नैतिक विकास का सिद्धांत दिया।

इस सिद्धांत में कोहलबर्ग ने नैतिक विकास के सिद्धांत (Principle of Moral Development) की कुल छः अवस्थाएँ बताई तथा इन अवस्थाओं को तीन स्तरों में बाँटा हैं।

नैतिक विकास के स्तर तथा सोपान
(Levels and Stages of Moral Development)

	स्तर	सोपान
i.	पूर्व–परम्परागत स्तर (Pre-conventional Level)	0. आत्मकेन्द्रित निर्णय (Eg. Centric Judgment) 1. दण्ड तथा आज्ञा पालन अभिमुखता (Punishment and Obedience Orientation) 2. यान्त्रिक सापेक्षिक अभिमुखता (Instrumental Relativist Orientation)
ii.	परम्परागत स्तर (Conventional Level)	3. परस्पर एकजुट अभिमुखता (Interpersonal Concordance Orientation) 4. अधिकार–संरक्षण अभिमुखता (Social Contract Legalistic Orientation)
iii.	उत्तर–परम्परागत स्तर (Post-Conventional Level)	5. सामाजिक अनुबन्ध विधिसम्मत अभिमुखता (Social Contract Legalistic Orientation) 6. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिमुखता (Universal Ethical Principle Orientation)

नैतिक विकास की परिभाषाएँ :–

सियर्स : सियर्स ने बालकों के नैतिक विकास पर समाजीकरण और शिशुपालन विधियों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया

बैन्ड्रा और वाल्टर्स :– बैन्ड्रा और वाल्टर्स न बताया कि बच्चे में नैतिक विकास सामजिक अधिगम का परिणाम होता है । बच्चा अपने परिवेश में नित्य नमनों के व्यवहार का अनुसरण कर नैतिक आचरण ग्रहण करता है । यहाँ नमूनों से अभिप्राय है माता–पिता, बड़े – भाई – बहन या अध्यापक आदि जिन्हें बच्चा अनुकरणीय समझता है ।

स्किनर :– स्किनर ने अधिकतर प्रबलन का प्रीाव प्रदर्शित करते हुए बताया है कि नैतिक व्यवहार का विकास, दंड एवं पुरस्कार निर्भर होता है ।

फ्रॉयड:–फ्रॉयड के अनुसार जब बच्चा माता–पिता कि भावनाओं और अभिवृत्तियों को उनसे ग्रहण करता है तथा उनसे ग्रहण की हुई नैतिकता ही आगे चलकर उसके लिए विवेक का रूप धारण कर लेती है । बालक नैतिक आचरण के लिए भीतर से निर्देशित होता है इसे फ्रॉयड ने नैतिक विकास में व्यक्ति की बाल्यकालन अनुभूतियों का महत्वपूर्ण बताया है ।

सभी वैज्ञानिकों द्वारा दी गयी परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि उनके द्वारा दिए गए सिद्धांत कोलबर्ग के सिद्धांत से अलग थे। कालबर्ग के सिद्धांत का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

कोहलबर्ग के सिद्धांत की मूलभूत मान्यताएँ :-

* बालक के नैतिक विकास को समझने के लिए उनके तर्क और सिद्धांत के स्वरुप का विश्लेषण करना आवश्यक है।

* बच्चे द्वारा प्रदर्शित प्रतिक्रियाओं के आधार पर इसकी नैतिका का सही अनुमान लगा पाना नामुमकिन है।

* अधिकतर परिस्थितियों में बच्चा भय या पुरस्क़ार के प्रलोभन में वांछनीय व्यवहार प्रदर्शित करता है।

* कोहलबर्ग ने बालक को किसी धर्मसंकट की स्थिति में रखकर यह देखा है कि वह उस परिस्थति में क्या सोचता है तथा किस तर्क के आधार पर उचित व्यवहार के लिए निर्णय लेता है।

* बालक के नैतिक विकास को समझने के लिए उनके तर्क और सिंद्धांत के स्वरुप का विश्लेषण करना आवश्यक है।

* बच्चे द्वारा प्रदर्शित प्रतिक्रियाओं के आधार पर इसकी नैतिकता का सही अनुमान लगा पाना नामुमकिन है।

* अधिकतर परिस्थितियों में बच्चा भय या पुरस्कार के प्रलोभन में वांडनीय व्यवहार प्रदर्शित करता है : कोलबर्ग ने बालक को किसी धर्मसंकट की स्थिति में रखकर यह देखा है कि वह उस परिस्थति में क्या सोचता है।

* तथा किस तर्क के आधार पर उचित व्यवहार के लिए निर्णय लेता है।

* कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत को अवस्था सिद्धांत भी कहा जाता है। उन्होंने सम्पूर्ण नैतिक विकास को छ: अवस्थाओं में बांटा है। उनके अनसार सभी बच्चे इन अवस्थाओं में से गुजरते है। नैतिक विकास की यह अवस्थाएं एक निश्चित क्रम में आता है। इस क्रम को बदला नहीं जा सकता।

* नैतिक विकास की प्रत्येक अवस्था में पाई जाने वाली नैतिका का गुण अन्य अवस्थाओं की नैतिका से अलग होता है। और प्रत्येक अवस्था में बालक की तर्क शक्ति नए प्रकार की होती है।

* बच्चा एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है। उस बच्चे की भीतर नैतिक व्यवहार गुणात्मक परिवर्तन कब और सेसे उत्पन्न होते है, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक व्यवहार में गुणात्म परिवर्तन क्रमिक रुप से ही आते है। अचानक ही पैदा नहीं हो जाते, अर्थात किसी अवस्था विशेष में पहुंचने पर बालक केवल उसी अवस्था की विशेषताओं का ही प्रदर्शन नहीं करता बल्कि उसमें कई अवस्थाओं के व्यवहार मिश्रित रुप से दिखाई पड़ते है।

नैतिक विकास की अवस्थाएँ :-

कोहलबर्ग ने नैतिक विकास की कुछ छ: अवस्थाओं का वर्णन किया है । उन्होने दो-दो अवस्थाओं को एक साथ रखकर उनके तीन स्तर बना दिए है । अत: वे तीन स्तर निम्न है । -

1 प्री - कन्वेंशनल (Pre-Conventional)

2. कन्वेंशनल (Conventional)

3. पोस्ट कन्वेशनल (Post-Conventional)

(A) प्री – कन्वेंशनल (Pre-Conventional) (3 से 9 वर्ष के बालकों के लिए)

जब बालक किन्हीं बाहरी घटनाओं के सन्दर्भ में किसी आचनरण को नैतिक अथवा अनैतिक मानता है, तो उसकी यह नैतिक तर्कशक्ति प्री–कन्वेंशनल स्तर की कही जाती है । इस स्तर के अंतर्गत निम्नलिखित दो अवस्थाएं आती है ।

* आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था
* अहंकार की अवस्था

आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था :–

* इस अवस्था में बच्चों का चिंतन दंड देने से प्रभावित होता है, अक्सर परिवार के बड़े सदस्य बच्चे की कुछ कार्य करने के आदेश देते रहते है ।
* इन आदेशों का पालन ना करने पर उसे दण्डित किया जाता है, इस तरह की परिस्थितियों में बच्चे को दंड से बचने के लिए आज्ञा का पालन करना पड़ता है ।

* छोटी आयु में बच्चा किसी कार्य को करने या करने का निर्णय इसलिए लेता है, क्योंकि उसे दंड का भय होता है।

अत: नैतिक विकास की शुरु की अवस्था में दंड को बच्चों की नैतिकता का मुख्य आधार माना जाता है।

अहंकार की अवस्था :–

* कोहलबर्ग के अनुसार इस उप–अवस्था में बालक के चिंतन का स्वरुप बदल जाता है, आयु में वृद्धि होने के परिणाम स्वरुप बच्चा अपनी आवश्यकताओं को अच्छी तरह से समझने लगता है।
* उसके द्वारा किये जाने वाले ज्यादातर कार्यों से उसकी इच्छाएं पूरी हो जाती है।
* उसकी इच्छाओं के पूरे होने के तरीके अलग होते हैं।
* अगर कोई इच्छा झूठ बोलने से पूरी होती है तो वह झूठ बोलना उचित समझेगा, भूखे रहने पर किसी वस्तु को चुराकर खाने को वह नैतिक समझेगा।
* नैतिक विकास की इस अवस्था को आधार बालक का अहंकार और आवश्यकताएं उसकी तर्क शक्ति का आधार बन जाते हैं।

(B) परम्परागत/रुढ़िवादी/Conventional level (9 से 15 वर्ष)

कोहलबर्ग के अनुसार यह अवस्था परम्पराओं की समझ वाली होती है और इस अवस्था में व्यक्ति परम्पराओं को ध्यान में रखकर आचरण प्रकट करता है तथा इसके भी दो सोपान है –

(iii) प्रशंसा की अवस्था (9 से 12 वर्ष)

इस अवस्था में बच्चा किसी कार्य को इसलिए करता है, ताकि दूसरे लोग उसकी प्रशंसा करें, बच्चे इस अवस्था में निंदनीय आचरण से बचने के प्रयास में रहते है।

इस अवस्था में बच्चा सामाजिक प्रशंसा और निंदा के महत्व को समझने लगता हे, दूसरी ओर समाज के सदस्य बच्चों से विशिष्ट भूमिकाओं की अपेक्षा करते है ।

जब बच्चे इन भूमिकाओं का निर्वाह अच्छे से करते हैं तो समाज से उन्हें स्वीकृति मिलने लगता है, इस अवस्था के दौरान उन्ही व्यवहारों को बच्चे उचित और नैतिक मानते हैं । जिसके लिए वे परिवार, स्कूल, पड़ोस और मित्रों से प्रशंसा या मान्यता प्राप्त करते हैं ।

अत: हम कह सकते है कि इस अवस्था में बच्चे के चिंतन का स्वरुप समाज या उसके परिवेश से होता है ।

(iv) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था (12 से 15 वर्ष)

कोहलबर्ग के अनुसार, समाज के अधिकांश सदस्य नैतिक विकास की इस अवस्था तक पहुँच जाते है। यह अवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाती है।

इस अवस्था से पहले बच्चा समाज को इसलिए महत्वपूर्ण मानता था कि समाज से उसको स्वीकृति या प्रशंसा मिलती थी, लेकिन इस अवस्था में प्रवेश करने के बाद वह समाज को स्वयं में एक लक्ष्य मानने लगता है।

वह समाज कि प्रभाओं, परम्पराओं और नियमों में आस्था विकसित करके समाज के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करता है।

अच्चा यह सोचने लगता है कि उसे अच्छा कार्य इसलिए करना चाहिए क्योंकि यह उसका कर्तव्य है, और सामाजिक नियमों के विरुद्ध किया गया गर कार्य अनैतिक होगा।

(C) उत्तर परम्परागत/पश्य रुढ़िवादी /(Post- Conventional level) (15 वर्ष से अधिक)

कोहलबर्ग ने इस स्तर को भी दो उप अवस्थाओं में बांटा है जो निम्न प्रकार से है –

* सामाजिक समझौते की अवस्था
* विवेक की अवस्था

* सामाजिक समझौते की अवस्था :–

इस अवस्था में प्रवेश करने पर बच्चे के नैतिक चिंतन कि दशा में पर्याप्त परिवर्तन आ जाते हैं, अब व स्वीकार करके चलता है कि व्यक्ति और समाज के बीच एक समझौता होना अनिवार्य है।

इसी के साथ वह पारम्परिक लेन–देन में विश्वास करने लगता हे, उसको लगने लगता है कि व्यक्ति को सामाजिक नियम इसलिए स्वीकार करने चाहिए । और उनका सम्मान इसलिए करना चाहिए क्योंकि समाज व्यक्ति के हितों की रक्षा करता है ।

व्यक्ति अब यह सोचने लगता है कि चोरी आदि अनैतिक कार्य होते है ऐसा करने से समाज और व्यक्ति के बीच समझौता टूअ जाता है ।

* विवेक की अवस्था :-

यह अवस्था नैतिक विकास कि अंतिम अवस्था है, इस अवस्था में पहुंचने पर व्यक्ति का दृष्टिकोण भी विकसित होने लगता है ।

इस अवस्था में व्यक्ति में विवेक जाग जाता है, अब व्यक्ति को उचित-अनुचित तथा अच्छे-बुरे, आदि के बारे में अपने व्यक्तिगत विचार विकसित हो जाते है । अत: इस व्यवस्था में पहुंचकर व्यक्ति व्यक्ति सामाजिक नियमों की व्याख्या अपने स्वयं के दृष्टिकोण के अनुसार करने लगता है ।

अगर नियम उसके विवेक से मेल नहीं खाते तो वह नियमों कि वैधता को चुनौती तक दे देता है, अंतत: वह अपने वेवेक के सहारे जीवित रहने का आदि हो जाता है ।

निष्कर्ष :-

* इस तरह हम कह सकते है कि नैतिक व्यवहार को बच्चा सामाजिक परिधि और आस-पड़ोस में सीखता है।

* वह प्रारम्भ में पुरस्कार, दण्ड, प्रशंसा तथा निंदा के माध्यम से अच्छे आचरण सम्पन्न करता है, बालक कई स्तरों और अवस्थाओं से गुजरता है।

* हर अवस्था में बालक का व्यवहार और मान्यताएं अलग हो सकती है, कभी वह झूठ बोलना उचित समझता है तो कभी चोरी करना।

* कभी उसको अपनी प्रशंसा अच्छी लगने लगती है, पर जैसे-जैसे वह समाज में उठने-बैठने लगता है उसकी मान्यताओं में बदलाव आने शुरु हो जाते हैं।

* अंतत: उसमें विवेक की अवस्था पैदा हो जाती हे, अब उसको उचित-अनुचित तथा अच्छे-बुरे, आदि का ज्ञान हो जाता है। और वह विवेक के सहारे जीवन जीने लगता है।

लॉरेन्स कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत

स्तर	आयु	नैतिकता	अवस्था - (6)	आन्तरिक विवेक	मुख्य संबंध
पूर्व परंपरागत स्तर	3 से 9 वर्ष	प्राक नैतिक	दंड और आज्ञापालन अभिविन्यास	यदि मैं यह कार्य नहीं करुंगा, तो मुझे दण्ड मिलेगा ।	दण्ड से बचने के लिए आत्मरक्षा
			यांत्रिक / कारण सापेक्ष अभिविन्यास	यदि मैं यह कार्य अच्छी तरह करुं, तो मुझे पुरुस्कार मिलेगा ।	लाभ के लिए कार्य करना
परंपरागत स्तर	9 से 15 वर्ष	सामाजिक	अच्छी लड़की / अच्छा लड़का अभिविन्यास (प्रशंसा का अवस्था)	अच्छे लोग गलत या बुरे कार्य नहीं करते तो मैं भी नहीं करुंगा ।	कर्तव्यपरायणता
			कानून और व्यवस्था अभिविन्यास (कानून के प्रति सम्मान की अवस्था)	चोरी करना कानूनी रुप से अवराध है, यह कार्य कानूनी रुप से उसके विरुद्ध है ।	आदर्श नागरिक
पश्च / उत्तर परंपरागत स्तर	15 वर्ष से अधिक	स्व- अनुमोदित	सामाजिक अनुबंध अभिविन्यास	तत्कालीन आवश्यकता के हिसाब से मैं चोरी कर लूंगा ।	तर्क
			सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास	किसी की जान बचाने के लिए मैं अपनी जान भी दे दूंगा ।	व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा

धन्यवाद